इकाई 1 संस्कृत गद्य और नीति काव्य की उत्पत्ति और विकास

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 काव्य का अर्थ

1.3 काव्य के भेद

1.4 काव्य की उत्पत्ति

1.5 नीति काव्य का उद्देश्य

1.6 नीति काव्य का स्वरूप

1.7 नीति काव्य का उद्भव व विकास

1.8 नीति काव्य का वैशिष्ट्य

1.9 नीति कथाओं का उद्भव व विकास

1.10 सारांश

1.11 शब्दावली

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.13 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र नीति काव्य साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- नीति काव्य के उद्भव व विकास की परम्परा को जान पाएँगे।
- नीति काव्यों की लेखन शैली से परिचित होंगे।
- संस्कृत नीति काव्यों को स्वयं पढ़ने के लिये प्रेरित होंगे।

1.1 प्रस्तावना

नीति काव्यों का उद्भव भारत में वेदों से ही हुआ है । इन कथाओं व काव्यों की सहायता से कम बुद्धि वाले बालक भी लोकव्यवहार व

राजनीति की गूढ व जटिल बातों को आसानी से समझ सकते हैं – "**कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते**" इन काव्यों में दैनिक-जीवन, समाज और जगत् से सम्बद्ध गूढ व दुर्लभ ज्ञान अत्यन्त सरल भाषा में समाहित है । अपने दैनिक जीवन में इस ग्रन्थ में प्रतिपादित नीतियों का अनुसरण करने से मनुष्य सुख व शान्ति प्राप्त करता है । मनुष्य के व्यक्तित्व में बहु आयामी विकास हेतु यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है ।

1.2 काव्य का अर्थ

काव्य शब्द कवि + ण्यत् प्रत्यय से मिलकर बना है । कवि की रचना को ही काव्य कहा जाता है - **'कवेः कर्म काव्यम्'** । कवि शब्द 'कु' अथवा 'कव्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – विवरण देना, ध्वनि करना, चित्रण करना इत्यादि । एतदनुसार, शब्दों के माध्यम से किसी विषय का आकर्षक रूप में विवरण या अत्यन्त सुन्दर चित्रण करना ही काव्य कहलाता है । जो रचना पाठक अथवा श्रोता के हृदय में रस की उत्पत्ति करवाने में समर्थ हो, उसे ही काव्य कहा जाता है ।

1.3 काव्य के भेद

संस्कृत साहित्य में काव्य शब्द का व्यापक अर्थ है । संस्कृत भाषा में निबद्ध साहित्य इतना अधिक समृद्ध और विशाल है कि इसकी समानता हम विश्व के किसी भी अन्य साहित्य के साथ नहीं कर सकते हैं। संस्कृत साहित्य में उपलब्ध साहित्य को प्रथम दृष्टि से हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- **(1) वैदिक साहित्य और (2) लौकिक साहित्य**

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, सूत्र ग्रंथ तथा वेदांगों तक के सम्पूर्ण साहित्य को लिया जा सकता है,

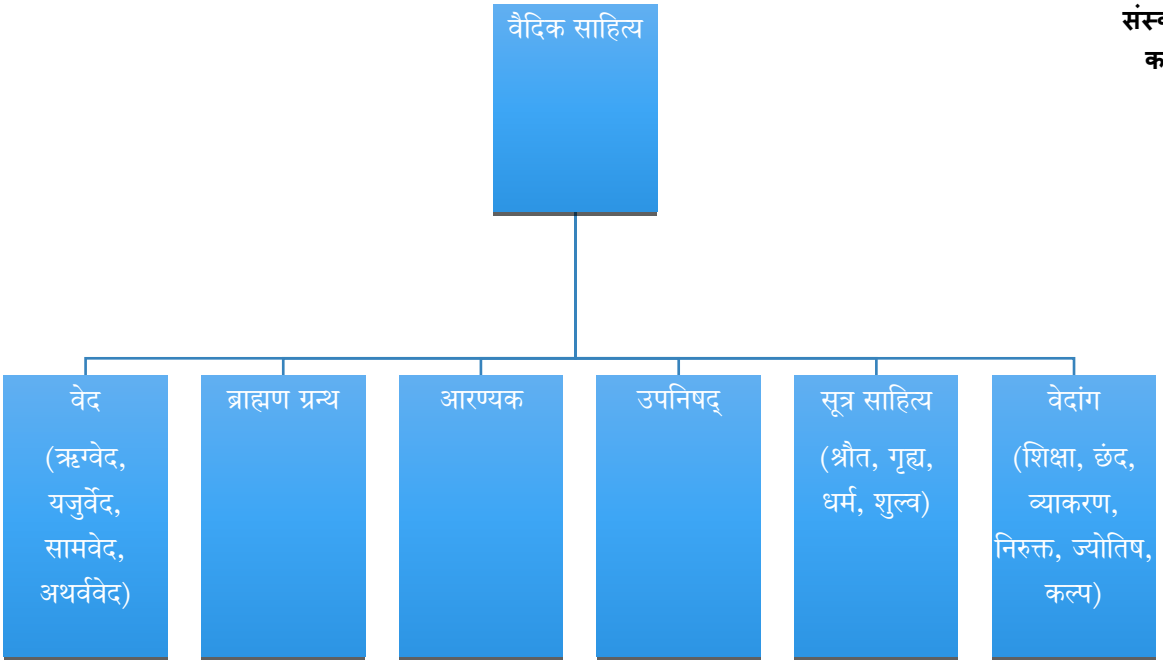

लौकिक संस्कृत साहित्य को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- दृश्यकाव्य तथा श्रव्यकाव्य

1) दृश्यकाव्य

लौकिक साहित्य में काव्य दो प्रकार का होता है – दृश्यकाव्य तथा श्रव्यकाव्य । इनमें भी **दृश्यकाव्य** जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, 'देखे जाने के कारण इस दृश्यकाव्य कहलाते हैं।' जिस काव्य का मंच पर अभिनय के माध्यम से दृश्य प्रस्तुत किया जाए, वही दृश्य काव्य कहलाता है जैसे - नाटक । नाटक में विविध पात्र काव्य की भावना के अनुसार वेशभूषा को धारण करते हैं, उन पात्रों के आचरण एवं वाणी का अभिनय-कौशल एवं अभ्यास से अनुकरण करते हैं, जिसे देखकर द्रष्टा स्वयं को उसी काल एवं परिस्थितियों में अनुभव करता है, जिसमें नाटक की कथावस्तु निबद्ध होती है। दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक का समावेश किया गया है क्योंकि इसका रसास्वादन मुख्यतः नेत्रों के माध्यम से किया जाता है । इसी प्रकार पात्रों की अवस्था का अनुकरण करने के कारण विद्वानों द्वारा इसे 'नाट्य' संज्ञा भी प्रदान की गयी है। यही दृश्य-काव्य, रूपक और उपरूपक भेद से दो प्रकार का होता है। पुनः रूपक के दस भेदों तथा उपरूपक के अट्ठारह भेदों का उल्लेख प्राप्त होता है।

2) श्रव्यकाव्य

श्रव्यकाव्य जैसा कि नाम् से ही स्पष्ट है जिस काव्य का श्रवण किया जाए, वह श्रव्य काव्य कहलाता है । श्रव्य काव्य में शब्दों के माध्यम से पाठकों अथवा श्रोताओं के हृदय में रस का सञ्चार किया जाता है । इसका रूपकों अथवा नाटकों के समान अभिनय सम्भव नहीं होता है। यह गद्य, पद्य और चम्पू भेद से तीन प्रकार का होता है। आइये संस्कृत साहित्य के इस सम्पूर्ण विस्तार को संक्षेप में सरलता की दृष्टि से हम इस चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं –

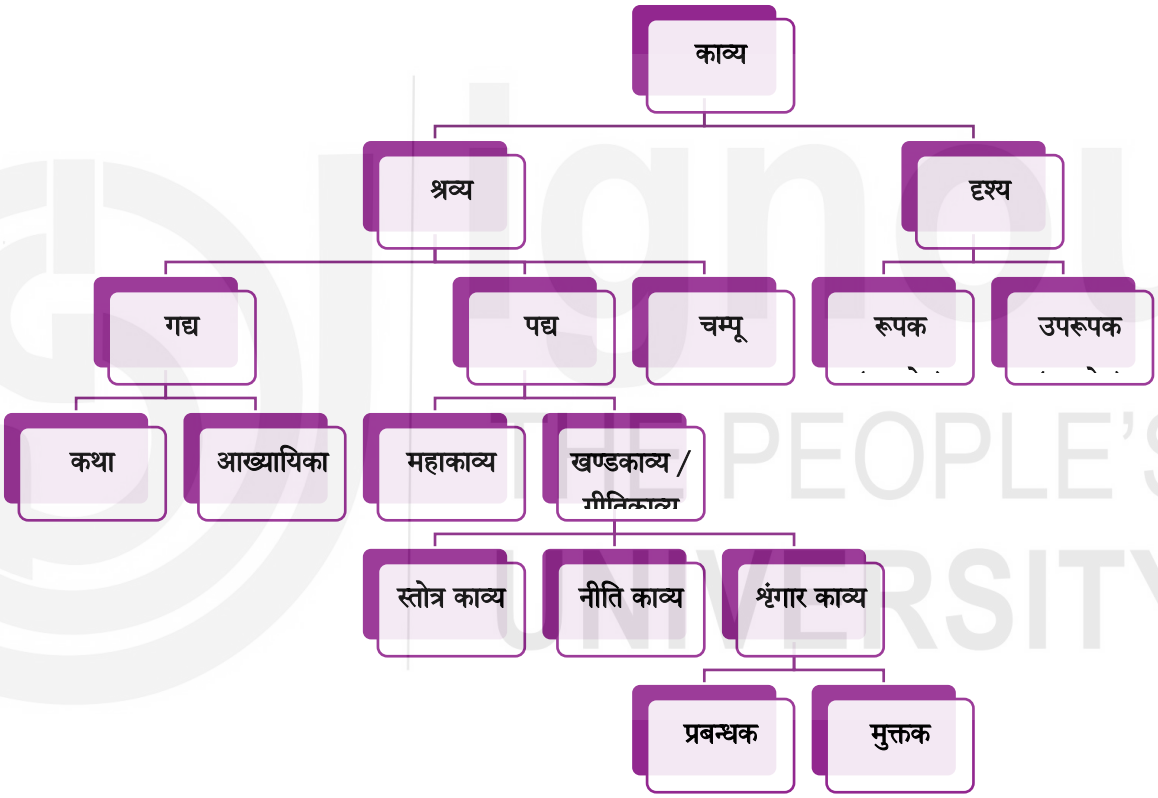

1.4 काव्य की उत्पत्ति

काव्य की उत्पत्ति वेद से हुई है क्योंकि ऋग्वेद के संवाद सूक्तों में काव्य का प्रथम रूप हमें प्राप्त होता है । ऋग्वेद के उषा सूक्त में काव्य के बीज प्राप्त होते हैं । उषा सूक्त में बड़े ही काव्यात्मक रूप में वर्णन किया गया है कि उषा अंधकार को दूर करती है व प्रकाश फैलाती है । उदाहरण के तौर पर उषा सूक्त के एक मंत्र की हिन्दी यहाँ प्रस्तुत है - "(एषा) यही है वह उषा जो (दर्शता) अन्तर्दर्शनसे संपन्न है । वही (जनं बोधयन्ती) जन-जनको जागृत करती है, (पथ: सुगान् कृण्वती) उसके मार्गोको यात्रा

करनेके लिए सुगम बनाती है और (अग्रे याति) उसके आगे-आगे चलती है । (बृहद्रथा) कितना विशाल है उसका रथ ! (बृहती विश्वम्-इन्वा) कितनी विशाल और सर्वव्यापक है वह देवी ! (उषा: अहनाम् अग्रे ज्योति: यच्छति) अहो कैसे वह दिनों के आगे-आगे ज्योति लाती है !"[1] उषा सूक्त के इस मंत्र में काव्य का प्रथम स्वरूप स्पष्ट झलकता है।

इस प्रकार ऋग्वेद में राजाओं की दानस्तुतियों में भी काव्य की झलक प्राप्त होती है । उषा के अतिरिक्त इन्द्र, वरुण, सविता, रुद्र आदि अनेक देवताओं के गुणों को बड़े ही काव्यात्मक रूप से वेदों में प्रस्तुत किया गया है ।

अथर्ववेद का अक्ष सूक्त भी काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें एक जुआरी जूएँ के कारण अपना सर्वस्व खो देता है । उसे सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है परिवार, स्त्री व बच्चे सब उसे छोड़कर चले जाते हैं । सभी के घर प्रकाशमान हैं केवल उस जुआरी के घर को छोड़कर । उस जुआरी की बड़ी ही मार्मिक स्थिति का वर्णन अथर्ववेद के अक्ष सूक्त में प्राप्त होता है ।

न केवल वेदों में अपितु ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् व वेदांगों में भी काव्य की छटा हमें प्राप्त होती है । इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि काव्य की उत्पत्ति वेदों से ही हुई है ।

1.5 नीति काव्य का उद्देश्य

नीति काव्यों के माध्यम से बच्चों में संस्कार अनुप्राणित किये जाते थे । नीति काव्यों का मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति करवाना है । इनका प्रतिपाद्य विषय सदाचार, राजनीति व व्यावहारिक ज्ञान है ।

1.6 नीति-काव्य का स्वरूप

नीति-काव्य गीतिकाव्य के अत्यधिक निकट होते हुए भी उससे पर्याप्त भिन्नता रखता है, जिसे हम इन बिन्दुओं के माध्यम से समक्ष सकते हैं-

1 https://motherandsriaurobindo.in

1. नीति काव्य का प्रत्येक श्लोक अपने अभिप्राय को पूर्णतया स्वतन्त्र रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ होता है। उसे आगे व पीछे के अन्य किसी संदर्भ की अपेक्षा नहीं रहती है।
2. इसमें, जीवन के किसी भी क्षेत्र के सम्बन्ध में किसी शिक्षा या आचार विषयक बात का कथन किया जाता है, जिसे कवि स्वयं के अनुभव के आधार पर कहता है अथवा फिर अन्य किसी के द्वारा उनके अनुभवों के आधार पर कहे गए, पद्यों का भी संकलन कर लेता है।
3. जैसा कि 'चाणक्य-नीति' में किया गया है, क्योंकि सम्भव है कि यहाँ कुछ पद्य 'आचार्य चाणक्य' के स्वयं के जीवन के अनुभवों के आधार पर लिपिबद्ध किए गए हों, जिसे स्वयं ग्रन्थकार ने प्रारम्भ में ही प्रयुक्त मंगलाचरण में स्वीकार भी किया है-

   प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम्।
   नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम्।।

   अर्थात् आचार्य चाणक्य ने अनेक प्रकार के अन्य ग्रन्थों वेद, पुराण, स्मृति-ग्रन्थ, महाभारत, उपनिषद् आदि से अर्थात् अपने से पूर्ववर्ती ग्रन्थों से ग्रहण करके ही यहाँ श्लोकों को प्रस्तुत किया है।
4. अतः इस दृष्टि से नीति-काव्यों को 'संग्रह-ग्रन्थ' भी कहा जा सकता है, जिनमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े दैनिक जीवनोपयोगी आचार, व्यवहार आदि से सम्बन्धित श्रेष्ठ बातों का उल्लेख किया जाता है।
5. इसका विभाजन अध्यायों में किया जा सकता है, किन्तु इसके लिए आवश्यक नहीं है, कि यहाँ विषयों का वर्गीकरण करके ही श्लोकों का संग्रह किया जाए, यद्यपि नीतिशतककार महाकवि भर्तृहरि ने नीतिशतकम् में विषयों का वर्गीकरण करके, उन्हें पद्धतियों में विभाजित किया है।

1.7 नीति काव्य का उद्भव एवं विकास-

जिस प्रकार अन्य सभी प्रकार की साहित्यिक विधाओं का उद्गम स्थान वेदों को माना गया है, ठीक उसी प्रकार नीतिकाव्य के बीज भी हमें

ऋग्वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों में सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं, क्योंकि अनेक स्थलों पर यहाँ वैदिक ऋषि ने समाजोपयोगी एवं आचार विषयक बातों का उल्लेख किया है। जैसे-

संगच्छध्वम् संवदध्वम्, संवो मनांसि जानताम्।

संहिता-ग्रन्थों के पश्चात् ब्राह्मण-ग्रन्थों में विशेषरूप से ऐतरेय आरण्यक में नीति-सम्बन्धी अनेक बातें हमें देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार बाद में प्रणीत उपनिषद् ग्रन्थ भी इसके अपवाद नहीं हैं। यदि यहाँ प्रयुक्त समस्त नीति-वाक्यों का संग्रह किया जाए तो निश्चय ही उत्कृष्ट नीति-ग्रन्थ की रचना हो सकेगी।

उपनिषदों के बाद विरचित सूत्रग्रन्थ, सभी पुराण, स्मृति ग्रन्थ, रामायण, महाभारत आदि भी इसी प्रकार श्रेष्ठ सूक्तियों के प्रयोग स्थल रहे हैं, जिनका उपयोग हमारे विवेच्य आचार्य चाणक्य ने भी अपनी कृतियों में निःसंकोचरूप से किया है। इन ग्रन्थों में चाणक्य-नीति चाणक्य-शतकम्,चाण्कय-नीतिदर्पण, चाणक्य-राजनीति, वृद्धचाणक्य और लघुचाणक्य आदि का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

a) इसी क्रम में वररूचि के नाम से भी **'नीतिरत्नम्'** जैसे कुछ नीतिग्रन्थों की उपलब्धता रही है।
b) घटकर्पर नामक कवि का **'नीतिसार'** भी नीतिशास्त्र विषयक उत्कृष्ट ग्रन्थ माना गया है।
c) इसी प्रकार वेतालभट्ट का **'नीतिप्रदोष'** नामक ग्रन्थ नीति-ग्रन्थों के विकास कड़ी में विशेषरूप से उल्लेखनीय है।
d) इसके अलावा छठी शती में मदुरा निवासी सुन्दर की **'नीतिद्विषष्टिका'** की रचना भी नीतिग्रन्थों की श्रृंखला में महत्त्वपूर्ण कड़ी कही जा सकती है।
e) इसी समय में बौद्ध विद्वान आचार्य शान्तिदेव ने **बोधिचर्या-वतार, शिक्षा-समुच्चय, सूत्र-समुच्चय** नामक नीति-ग्रन्थों का प्रणयन किया।
f) इसी क्रम में काश्मीर के राजा शंकर वर्मा (883 ई. – 902 ई.) के आश्रित कवि भल्लट ने भी **'भल्लट-शतकम्'** नामक नीतिग्रन्थ की रचना की, जिसमें उन्होंने विविध छन्दों में 108 श्लोकों की संरचना की है।

g) इसी प्रकार 1205 ई. से पूर्व स्थित श्रीधरदास की **'सदुक्ति-कर्णामृत'** भी नीति-ग्रन्थों में उल्लेखनीय कृति कही जा सकती है ।

h) इसके अलावा काश्मीरी विद्वान शिल्हण का **'शान्तिशतकम्'** इस दिशा में प्रशंसनीय नीति-ग्रन्थ कहा जा सकता है, इनके जीवन और काल के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

i) काश्मीर के राजा श्री हर्ष (1089 ई. – 1101 ई.) के आश्रित कवि शम्भु ने भी 108 श्लोकों में **'अन्योक्ति मुक्तालताशतकम्'** की रचना की थी, जिसे उत्कृष्ट नीति-ग्रन्थों के कड़ी में ही परिगणित किया जा सकता है।

j) कुसुमदेव का **दृष्टान्त शतक** तथा गुमानि का **उपदेशशतक** नागराज का **भावशतक** आदि भी इसी क्रम में उल्लेखनीय नीति-ग्रन्थ है। जिनमें विविध छन्दों को प्रयोग किया गया है।

k) उल्लेखनीय है कि दार्शनिक विषयों पर भी नीतिग्रन्थों का प्रणयन हुआ है, जिनमें काश्मीर के राजा जयापीड़ (779 ई. – 813 ई.) के मन्त्री दामोदरदास गुप्त का **कुट्टनीमतम्** विशेषरूप से उद्धरणीय है।

l) इसी प्रकार काश्मीर कवि जल्हण (12वीं शती का पूर्वार्द्ध) ने 66 पद्यों में वेश्याओं के चंगुल से बचने के उपायों का कथन भी, नीति-शास्त्रीय शैली में ही किया है।

m) उक्त नीति-ग्रन्थों के अतिरिक्त **चातकाष्टकम्** एवं भट्ट उर्वीधर कवि के नाम से भी कुछ पद्य उपलब्ध होते हैं, जबकि **नीति-रत्न** नामक रचना में भी अनेक पद्यों का प्रयोग शिक्षा प्रदान करने के रूप में हुआ है, जो 'नीति संस्कृत साहित्य' की श्रीवृद्धि में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान को देते रहे हैं।

n) इसी प्रसंग में उल्लेखनीय बिन्दु यह भी है कि संस्कृत के इतिहास ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में व्यवस्थित सामग्री का लगभग अभाव ही है। महाकवि भर्तृहरि के नीतिशास्त्रीय ग्रन्थ नीतिशतकम् को गीतिकाव्य के रूप में उल्लेख करने के बाद यहाँ अन्य नीति-ग्रन्थों के विषय में किसी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवरण हमने यत्र तत्र विकीर्ण उल्लेखों के आधार पर ही प्रस्तुत किया है। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से नीतिग्रन्थों के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी जुटाने की महती आवश्यकता है।

1.8 नीति काव्यों का वैशिष्ट्य-

नीतिकाव्यों के वैशिष्ट्य को हम निम्न बिन्दुओं में भलीप्रकार समझ सकते हैं-

1) नीतिकाव्य कवि के अपने जीवन के व्यापक अनुभवों को सिमेटने का प्रशंसनीय प्रयास करते हैं।
2) इन ग्रन्थों में व्यक्ति जीवन में अपने-पराए, सजातीय-विजातीय-शत्रु-मित्र, परिचित-अपरिचित, आदि से किस प्रकार व्यवहार करें, जिससे वह सुखी रह सके, इसका विशेषरूप से उल्लेख किया गया है, क्योंकि सुख प्राप्त करना ही व्यक्ति के जीवन का मुख्य उद्देश्य है। अतः यहाँ इस विषय में अनेकशः दिशानिर्देश प्रदान किए गये हैं।
3) नीति-काव्यों में दी गयी शिक्षा को हम अनेक विभागों में विभाजित करके देख सकते हैं, जैसे- सामाजिक-धार्मिक-आचार शिक्षा विषयक, राजनीति विषयक, विश्वजनीन एवं राष्ट्रीय शिक्षा आदि।
4) इन काव्यों की महती विशेषता यह है कि ये किसी एक देश, काल का प्रतिनिधित्व न करके, सार्वभौम और सार्वजनीन संदेश प्रदान करते हैं, क्योंकि चाणक्य-नीति में उल्लिखित बातें तथा अन्य सभी नीति-ग्रन्थों में प्रतिपादित संदेश, निर्देश आज भी उतने ही उपयोगी हैं, जितने वे हजारों वर्ष पूर्व मानव-जीवन में रहे होंगे।
5) नीति-काव्यों की सबसे बड़ी विशेषता, इनमें भाषा की सरलता एवं इनका सुबोधरूप में प्रयुक्त होना भी रहा है। समासयुक्त पदों का प्रयोग यहाँ प्रायः देखने को नहीं मिलता है।
6) पाण्डित्य प्रदर्शन का यहाँ पूर्णतया अभाव रहा है। अलंकार अपने स्वाभाविकरूप में भावों की अभिव्यक्ति में सहायक के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं, कहीं भी इनका सायास प्रयोग नहीं किया है।
7) इन नीति-ग्रन्थों में कहीं उपादेय वस्तुओं की गणना की गयी है तो कहीं सामाजिक सिद्धान्तों पर बल दिया गया है और उसके लिए एक ही शब्द की बार-बार आवृत्ति भी की गयी है।
8) संख्यानुसारी नियमों की प्रवृत्ति यहाँ भी देखी जा सकती है अर्थात् संख्या गिनाकर एक ही क्रियापद का प्रयोग कर लिया जाता है।

9) अनेक बार सम्पूर्ण वाक्य में एक ही क्रियापद का प्रयोग भी करते हैं।

10) श्लोक में अनेकशः क्रियापद का प्रयोग ही नहीं किया जात, अपितु अर्थ करते समय उसका आक्षेप किया जाता है।

1.9 नीति कथाओं का उद्भव व विकास

नीति कथाओं का उद्भव भी भारत में वेदों से ही हुआ है । इन कथाओं के पात्र अधिकतर मनुष्य न् होकर पशु व पक्षी ही होते हैं । इन कथाओं में वे मनुष्यों के समान ही अपने सभी कार्य करते हैं । इन कथाओं की सहायता से कम बुद्धि वाले बालक भी लोकव्यवहार व राजनीति की गूढ व जटिल बातों को आसानी से समझ सकते हैं – "**कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते**"

नीति का उपदेश करने वाली पूरी कथा प्रायः गद्य में दी जाती है, परन्तु उसके बीच बीच में व समाप्ति में नैतिक उपदेश से युक्त पद्य भी होते हैं ।नीति कथाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें प्रधान कथा के अंतर्गत कई अन्य गौण कथाओं का भी समावेश कर दिया जाता है । ये कथाएँ बड़ी सरल, सुबोध व आकर्षक शैली में लिखी गई हैं । संस्कृत साहित्य के मुख्य नीति काव्य ग्रंथ पंचतन्त्र हितोपदेश व कथासारित्सागर हैं, जिनके विषय में आप अग्रिम अध्यायों में जानेंगे । यहाँ कुछ नीति ग्रंथों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(1) **शुकसप्तति -शुक से तात्पर्य है तोता व सप्तति का अर्थ है सत्तर ।** शुकसप्तति में 70 कहानियाँ हैं, इसका कथानक मदनसेन नामक युवक से संबंधित है, जो अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करता है । एक बार वह परदेश चला जाता है । उसके परदेश चले जाने पर उसकी पत्नी पर पुरुष के साथ के लिए उत्सुक हो जाती है परंतु उसका तोता अपनी स्वामिनी को उसके पति मदनसेन के परदेश से वापस आने तक 70 रातों में 70 कहानियाँ सुनाता है जिससे वह स्त्री पथभ्रष्ट ना होवे ।

(2) **सिंहासनद्वात्रिंशिका** – यह राजा विक्रमादित्य से संबंधित 32कहानियों का एक संग्रह है । इसका दूसरा नाम विक्रम चरित भी है । धारा के राजा भोज (11 वीं शताब्दी) को एक बार पृथ्वी में गढ़ा

हुआ एक विक्रमादित्य का सिंहासन प्राप्त होता है । वह उसे वहाँ से निकल लाता है तथा जैसे ही उस पर बैठने लगता है वैसे ही उस सिंहासन में जड़ी हुई पुतलियाँ अर्थात् आत्माएँ एक-एक करके राजा विक्रमादित्य के पराक्रम व न्याय की कथाएँ सुनाती हैं व राजा भोज को उस सिंहासन पर बैठने के अयोग्य स्थित कर देती हैं । वस्तुतः 12 आत्माएँ ही 32 पुतलियों के रूप में है । वे सभी अपनी-अपनी कथा सुना कर मुक्त हो जाती हैं ।

(1) **वेतालपंचविंशति** - यह 25 कथाओं का एक रोचक संग्रह है । इन कहानियों का वक्ता एक वेताल है और श्रोता राजा विक्रमादित्य हैं । राजा विक्रमादित्य को कोई सिद्ध पुरुष प्रतिदिन एक फल लाकर देता है, क्योंकि उसे किसी सिद्धि में विक्रमादित्य की सहायता चाहिये । उस पुरुष की सिद्धि में सहायता के लिये राजा विक्रमादित्य को वृक्ष पर लटकते हुए एक शव को लेकर आना है । परन्तु वह शव किसी वेताल के आधिपत्य में है । वह वेताल राजा को तभी वह शव देगा यदि वह चुप रहेगा । जैसे ही राजा शव के लेकर जाता है तो वेताल राजा को अत्यन्त विचित्र कथा सुनाता है और अन्त में प्रश्न पूछ लेता है । जिसका उत्तर राजा विक्रमादित्य दे देते हैं और राजा का मौन भंग हो जाता है । ये 25 कहानियाँ अत्यन्त रोचक हैं ।

बोध /अभ्यास प्रश्न -

1. काव्य शब्द कैसे बना है ?
2. काव्यों की उत्पत्ति कहाँ से हुई ?
3. नीति काव्यों का क्या उद्देश्य है ?
4. काव्य के भेदों का रेखाचित्र बनाएँ ?
5. नीति काव्यों की विशेषताएँ बतलाएँ ?

1.10 सारांश

इस अध्याय में काव्य का अर्थ, काव्य के भेद, काव्य की उत्पत्ति, नीति काव्य का उद्देश्य, नीति काव्य का स्वरूप, नीति काव्य का उद्भव व विकास, नीति काव्य का वैशिष्ट्य व नीति कथाओं का उद्भव व विकास के विषय में विस्तार से जाना ।

1.11 शब्दावली

उद्भव = **उत्पत्ति**

पंचविंशति = **पच्चीस**

रसास्वादन = रस का पान करना

वेताल = **आत्मा**

शुक = **तोता**

संगच्छध्वम् = **साथ चलें**

संवदध्वम् = **साथ बोलें**

सप्तति = **सत्तर**

समाजोपयोगी = समाज के लिये उपयोगी

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री – मोतीलाल बनारसीदास
- संस्कृत शिक्षण सरणी – आचार्य राम शास्त्री - परिमल पब्लिकेशन दिल्ली
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ। उमा शंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, 2004
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009 ।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी 2001.
- संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018.
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- सम्पूर्ण चाणक्य नीति, डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर, 2016.
- spokensanskrit.org
- **www.ashtadhyayi.com**

1.13 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. काव्य शब्द कवि + ण्यत् प्रत्यय से मिलकर बना है । कवि की रचना को ही काव्य कहा जाता है - **'कवेः कर्म काव्यम्'** । कवि शब्द 'कु' अथवा 'कव्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – विवरण देना, ध्वनि करना, चित्रण करना इत्यादि । एतदनुसार, शब्दों के माध्यम से किसी विषय का आकर्षक रूप में विवरण या अत्यन्त सुन्दर चित्रण करना ही काव्य कहलाता है । जो रचना पाठक अथवा श्रोता के हृदय में रस की उत्पत्ति करवाने में समर्थ हो, उसे ही काव्य कहा जाता है ।
2. काव्यों की उत्पत्ति वेदों से हुई है ।
3. 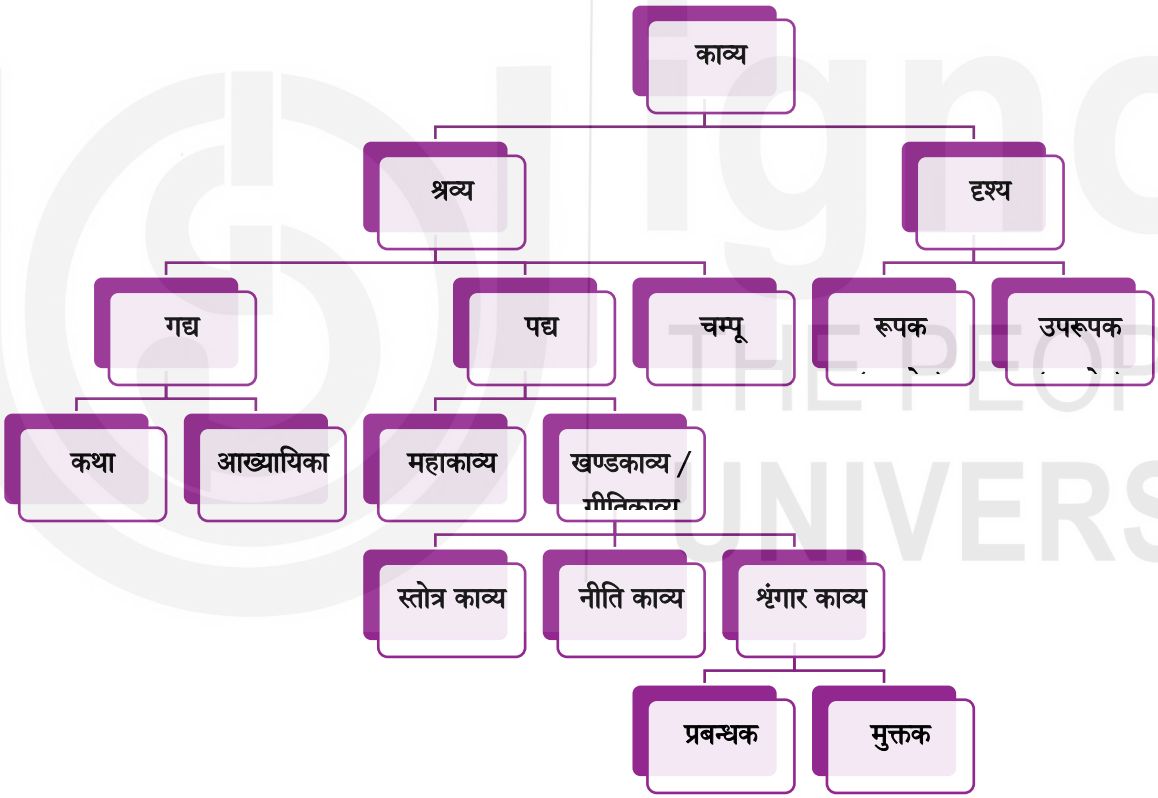

4. नीति काव्यों का उद्देश्य - नीति काव्यों के माध्यम से बच्चों में संस्कार अनुप्राणित किये जाते थे । नीति काव्यों का मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति करवाना है । इनका प्रतिपाद्य विषय सदाचार, राजनीति व व्यावहारिक ज्ञान है ।
5. नीति काव्यों की विशेषताएँ को हम निम्न बिन्दुओं में भलीप्रकार समझ सकते हैं-

- नीतिकाव्य कवि के अपने जीवन के व्यापक अनुभवों को सिमेटने का प्रशंसनीय प्रयास करते हैं।
- इन ग्रन्थों में व्यक्ति जीवन में अपने-पराए, सजातीय-विजातीय-शत्रु-मित्र, परिचित-अपरिचित, आदि से किस प्रकार व्यवहार करें, जिससे वह सुखी रह सके, इसका विशेषरूप से उल्लेख किया गया है, क्योंकि सुख प्राप्त करना ही व्यक्ति के जीवन का मुख्य उद्देश्य है। अतः यहाँ इस विषय में अनेकशः दिशानिर्देश प्रदान किए गये हैं।
- नीति-काव्यों में दी गयी शिक्षा को हम अनेक विभागों में विभाजित करके देख सकते हैं, जैसे- सामाजिक-धार्मिक-आचार शिक्षा विषयक, राजनीति विषयक, विश्वजनीन एवं राष्ट्रीय शिक्षा आदि।
- इन काव्यों की महती विशेषता यह है कि ये किसी एक देश, काल का प्रतिनिधित्व न करके, सार्वभौम और सार्वजनीन संदेश प्रदान करते हैं, क्योंकि चाणक्य-नीति में उल्लिखित बातें तथा अन्य सभी नीति-ग्रन्थों में प्रतिपादित संदेश, निर्देश आज भी उतने ही उपयोगी हैं, जितने वे हजारों वर्ष पूर्व मानव-जीवन में रहे होंगे।
- नीति-काव्यों की सबसे बड़ी विशेषता, इनमें भाषा की सरलता एवं इनका सुबोधरूप में प्रयुक्त होना भी रहा है। समासयुक्त पदों का प्रयोग यहाँ प्रायः देखने को नहीं मिलता है।
- पाण्डित्य प्रदर्शन का यहाँ पूर्णतया अभाव रहा है। अलंकार अपने स्वाभाविकरूप में भावों की अभिव्यक्ति में सहायक के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं, कहीं भी इनका सायास प्रयोग नहीं किया है।
- इन नीति-ग्रन्थों में कहीं उपादेय वस्तुओं की गणना की गयी है तो कहीं सामाजिक सिद्धान्तों पर बल दिया गया है और उसके लिए एक ही शब्द की बार-बार आवृत्ति भी की गयी है।
- संख्यानुसारी नियमों की प्रवृत्ति यहाँ भी देखी जा सकती है अर्थात् संख्या गिनाकर एक ही क्रियापद का प्रयोग कर लिया जाता है।
- अनेक बार सम्पूर्ण वाक्य में एक ही क्रियापद का प्रयोग भी करते हैं।
- श्लोक में अनेकशः क्रियापद का प्रयोग ही नहीं किया जात, अपितु अर्थ करते समय उसका आक्षेप किया जाता है।